इंटरव्यू सीरीज

पतली पुस्तक

अनुभव सिन्हा

अजय ब्रह्मात्मज से बातचीत

इंटर्व्यू सीरीज़

अनुभव सिन्हा

(अनुभव सिन्हा से यह बातचीत 2010 में हुई थी)

अजय ब्रह्मात्मज

अनुभव सिन्हा हिंदी फिल्मों के चर्चित निर्देशक हैं. आज के उत्तराखंड के कालागढ़ में बचपन बीता.फिर बनारस आये.सिनेमा देखना तो कालागढ़ से ही शुरू हो गया था, जो बनारस में परवान चढ़ा. तब यह केवल मनोरंजन और मस्ती का माध्यम था. पीता चाहते थे कि इंजीनियर बनें सो बन गए. अलीगढ़ में पढ़ाई की. वहीँ गिटार बजाना सीखा और स्टेज पर कुछ करने का मौका मिला.

अलीगढ़ में दिल्ली से वीरेन्द्र सक्सेना एक नाटक का निर्देशन करने आये थे. उनसे परिचय हुआ और समय के साथ परिचय गाढ़ा हुआ और मिलना जरी रहा. इंजीनियर बन कर फरीदाबाद आना हुआ. फिर एक दिन लगा कि यह नहीं करना है. और नौकरी छोड़ दी. तब वीरेन्द्र सक्सेना मुंबई से दिल्ली आते थे तो उनसे मिलना होता था. वीरेन्द्र सक्सेना के जरिये दिल्ली के रंगमंच और टीवी में सक्रिय लोगों से मुलाक़ात का सिलसिला बना. वीरेन्द्र सक्सेना ने उमेश बिष्ट से मिलवा दिया. वह ऑडियो विजुअल मध्यम में कुछ कर रहे थे. वहां से शौक चढ़ा.

वीरेन्द्र सक्सेना से बात हुई और उनके निमंत्रण पर मुंबई धमक गए. पहले वीरेन्द्र सक्सेना को लगा कि सभी की तरह एक्टर बनने आया होगा अनुभव. ऐसा नहीं था. अनुभव ने स्पष्ट कर दिया कि मुझे तो डायरेक्टर बनाना है. फिर महेश भट्ट और पंकज पाराशर से मुलाक़ात और सांगत हुई. दोनों ने ऑफर दिया,लेकिन अनुभव ने पंकज के साथ काम सीखा. जल्दी ही पारंगत हुए और स्वतंत्र निर्देशन किया और वह भी काफी किफ़ायत और कम लागत में, फिर ‘शिकस्त’ और ‘सी हॉक्स’ जैसे शो बने और वे बेहद कामयाब हो गए. इस बीच म्यूजिक वीडियो बनाने का शौक चर्राया. फिर तो सैकड़ों म्यूजिक वीडियो बना डाले. इस बीच फिल्मों के ऑफर मिलने लगे. म्यूजिक वीडियो से मन ऊबने लगा.

और फिर आई ‘तुम बिन’. यह अनुभव सिन्हा और भूषण कुमार की पहली फिल्म थी. ‘तुम बिन’ से ‘रा.वन’ तक के सफ़र में अनुभव ने बहुत कुछ हासिल किया और कुछ खोया भी. यह बातचीत ‘रा.वन’ के समय हुई थी. नौ साल हो गए, लेकिन ये बातें अभी तक अप्रकाशित रहीं. निर्देशक अनुभव सिन्हा को समझने के लिए यह बातचीत महत्वपूर्ण है.

अनुभव सिन्हा ने 'मुल्क' से निर्देशन की पटरी बदली. उनकी 'आर्टिकल 15' 28 जून 2019 को रिलीज हुई है.

उसी मौके पर यह बातचीत ले आया हूँ आप सभी के लिए.

सिनेमा की पहली याद के बारे में बताएं?

सिनेमा की पहली याद जो है... तब मैं नौ साल से कम उम्र का था. कालागढ़ एक जगह थी, जहां एक डैम बन रहा था. कालागढ़ गढ़वाल में है. वहां पिता जी डेपुटेशन पर थे. टेम्परेरी कालॉनी बनाई गई थी. वहां पर इजीनियर थे. डैम बनाने के सामन वहां थे. मेरे जीवन के पहले नौ साल वहां बीते हैं.

क्या नाम था जगह का?

कालागढ़, गढ़वाल में है. मुझे याद है.वहां पर एक सिनेमाहॉल था. और न्यू मार्केट कर के एक जगह थी वहां पर. पूरी कॉलोनी जो थी, वो डैम के लिए थी. वहां पर जो सबसे बड़ा आदमी था वह चीफ इंजीनियर था. 'जंजीर' फिल्म आई हुई थी. इसीलिए याद है पहले सिनेमा की. हमलोग देखने गए थे. तो पिक्चर शुरू हुई सबसे पहले जया जी का गाना था. 'चक्कू छुरियां तेज़ करा लो'. वो हिट गाना था शायद, गाना खत्म हुआ. पिक्चर चल रही है आगे. अचानक लाइट बंद हो गई. काफी देर तक लाइट बंद रही. छोटे शहरों के थिएटर में शोर-वोर होने लगता है. वहां भी होने लगा. क्या हुआ? क्या हुआ? फुसफुसाहट में खबर आई कि चीफ इंजीनियर साहब थोड़ा लेट आए हैं, वो गाना देखना चाहते हैं. पिक्चर दुबारा शुरू की जाएगी. पिक्चर दुबारा शुरू हुई. पब्लिक को भी कोई एतराज नहीं था. क्योंकि उनको भी गाना दोबारा देखने को मिला. ये पहली याद है. एकदम छप गया था. प्राण साहब बैठने जा रहे थे और अमिताभ बच्चन ने लात मारी थी कुर्सी पर. वो लात का जो एक शॉट था. पता नहीं वो चिपक गया था. उस उम्र में जिस समाज से हमलोग हैं वहां पर ऐसा नहीं था कि आगे जाकर फिल्में बनाएंगे. आपने पूछा तो अभी मैंने पहली बार याद करने की कोशिश की कि सिनेमा की पहली याद क्या है? तो वो है 'जंजीर' .